5/1/1966 बुधवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– मुखड़ा देख ले.....

ओमशांति ! अपना मुखड़ा देखना है और सामने श्री लक्ष्मी–नारायण वा राधे–कृष्ण के चित्र रखे हैं। भक्तिमार्ग में इनकी महिमा करते आए हैं। ...इनका मुखड़ा देख...। अभी ये चैतन्य तो सतयुग में रहने वाले हैं; परन्तु उन जैसा बनना है, ये है बच्चों की एम–ऑब्जेक्ट। इसको उद्देश्य कहा जाता है। अभी बच्चों को अपन को देखना है कि हम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बनने के लिए, उन जैसा बनने के लिए कहाँ तक पुरुषार्थ कर रहे हैं। ये मुखड़े के लिए बताते हैं ना। जैसे नारद के लिए भी तो ऐसा ही कहा कि मुखड़ा देखें– लायक हो ? क्योंकि उनकी महिमा, भक्तों की महिमा और देवताओं की महिमा में रात–दिन का फर्क है। यह तो बिल्कुल ही सहज समझा जा सकता है कि वो सतोप्रधान है और हम तमोप्रधान हैं। बड़ा फर्क है ! तो मुखड़ा देखना ही है कि भई, उनको सर्वगुण सम्पन्न कहा जाता है, अपन ऐसे बने हैं ? अभी वो कैसे बने हैं, अज्ञान काल में तो मनुष्य जानते नहीं हैं। अभी ज्ञान काल है कि बाप, ज्ञान का सागर बैठकर बच्चों को हर बात समझाते हैं और बरोबर गाया भी हुआ है कि राजयोग सीख नर से नारायण बनना है। जब नर से नारायण या नारी से लक्ष्मी... तो है ही, या मेल बनना है या फिमेल बनना है; परन्तु बनना है अब फिर से पवित्र प्रवृत्तिमार्ग वाले देवी और देवता ; इसलिए बाप, जिसको भगवान भी कहते हैं, आ करके फिर बदल करते हैं। बच्चों को भी बदल करते हैं तो दुनिया को भी बदल करते हैं; क्योंकि जब बच्चे ऐसे सर्वगुण सम्पन्न हो जाते हैं तो फिर उनके लिए नई दुनिया भी ऐसी ही चाहिए। तो ये बच्चों की बुद्धि में है, सब बच्चे जो भी हैं, जहाँ भी हैं कि दुनिया भी बदल रही है और हम भी बदल रहे हैं। कैसे बदल रहे हैं ? ये तमोप्रधान बुद्धि और ये सभी पुराना शरीर, इसको पलटाने के लिए हम श्रीमत पर बाप से योग रखते हैं (कि) पवित्र हो जावें; क्योंकि यहाँ तो ये शरीर पलटा नहीं खाएगा ना। आत्मा जब पतित शरीर छोड़ेगी तब फिर नया शरीर मिलेगा; क्योंकि ये पुराना शरीर तो नहीं बदलकर यहाँ ही नया हो जाएगा। ऐसे तो नहीं हो सकता है ना। कारण भी है कि यहाँ क्यों नहीं बदल सकता है।.. फिर जब बदल करने का है फिर वो पाँच तत्व भी सतोप्रधान चाहिए, रहने का स्थान भी सतोप्रधान चाहिए। पुरानी दुनिया को तो कोई सतोप्रधान दुनिया नहीं कहेंगे ना, रहने का स्थान। सतोप्रधान तो फिर भी नई दुनिया को कहा जाएगा। ये तो समझाया है कि सतोप्रधान दुनिया में, भारत में जब नई दुनिया थी, भारत था तो सतोप्रधान देवी–देवता रहते थे। अभी दुनिया को मालूम नहीं है कि उन्होंने कोई 84 जन्म ले करके अभी तमोप्रधान बने हैं। यह बुद्धि मनुष्यों में नहीं है। ये बाप बैठ करके तुम्हारी बुद्धि को समझाते हैं कि बरोबर तुम बच्चों को 84 जन्म लेना है, सीढ़ी उतरनी है और एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेना है, दूसरा छोड़ करके तीसरा लेना है और ज़रूर ऐसे करते–3 ये पुरानी हो जाती है। कपड़ा पहनते–2 पुराना हो जाता है ना, तैसे ये जो देह रूपी वस्त्र है, इनको वस्त्र भी कहते हैं। अरे, वस्त्र भी कह देते हैं, प्रकृति भी कह देते हैं, शरीर भी कह देते हैं। अभी बच्चों को बाप ने आ करके अच्छी तरह से समझाया और सन्मुख आ करके समझाया। देखो, सन्मुख भी कैसे अच्छे समझाते हैं। तो ऐसे मत समझो कि सिर्फ तुम्हारे सन्मुख हैं। ये जो कोई भी रेडियो से सुनते हैं या ये मुरली जाती है सुनते हैं, तो वो भी जैसे कि सन्मुख उनको समझाते हैं। वो समझते हैं कि बाबा जो मधुबन को समझा रहे हैं तो गोया हमको समझा रहे हैं। अभी जबकि तुमको ये मालूम है कि हमको फिर से सो देवता बनना है; क्योंकि 'फिर से, फिर से' तो अक्षर चला आता है। जैसे कहते हैं सृष्टि फिरती है, तैसे पुनर्जन्म भी ले करके हम कहते हैं ना– एक शरीर छोड़ करके फिर हम दूसरा लेते हैं। तो चक्कर लगाते हैं ना। चक्कर भी लगाते रहते हैं। देखो, चक्कर लगा हुआ है कि बरोबर सतयुग से हम त्रेता में आते हैं, फिर जो हम

सूर्यवंशी थे, फिर चंद्रवंशी बनते हैं। जो 16 कला थे सो 14 कला बनते हैं। अभी ये ज्ञान तो तुम बच्चों को अच्छी तरह से मिला हुआ है और ये भी समझते हो कि अभी आकर कलियुग के अंत में पहुँचे हैं तब बाप आए हुए हैं। कोई नई बात भी नहीं है। दिल से ये समझना है कि यह चक्कर तो हम लगाते ही रहते हैं; इसलिए हमारा ही नाम बाप ने स्वदर्शनचक्रधारी लगाया है और समझाया है कि देवताओं को तो स्वदर्शन नहीं देना है। उनको तो दरकार नहीं है; क्योंकि वो तुम्हारी प्रालब्ध है। सारे चक्कर का नॉलेज सुन करके इस समय में तुमको स्वदर्शनचक्रधारी कहा जाता है। जब पिछाड़ी होती है, रिज़ल्ट होती है, तो फिर वो रिज़ल्ट के ये चक्कर उनको दे देते हैं; क्योंकि ये जो चित्र बनाए हैं, इनमें बनाने वालों को तो कुछ पता नहीं है ना। नहीं तो सूक्ष्मवतन में बताते हैं स्वदर्शनचक्रधारी सूर्यवंशी ये विष्णु का रूप। ...वो तो फिर वहाँ सिर्फ एक ही है। सूर्यवंशी घराना चाहिए ना। चंद्रवंशी घराना चाहिए। घराना कोई सूक्ष्मवतन में नहीं होता है, घराना यहाँ होता है। इससे सिद्ध होता है ये जो सूर्यवंशी विष्णु दिखलाया गया है, इनके दो रूप यहाँ सतयुग में राज्य करते हैं। तो देखो, चित्र भी बनाते हैं तो उनमें भी तो इन बिचारे लोगों की अज्ञानता है कि जब लक्ष्मी–नारायण बनाते हैं तभी भी उनको नारायण को चार भुजाएँ दे देते हैं। अभी चार भुजाएँ तो ; क्योंकि ये हुआ शुरू से सतयुग का मनुष्य। ये तो हुए तुम्हारे पुरुषार्थी। वो तो हुआ स्वर्ग। अच्छा, सतयुग से ही मनुष्य शुरू होते हैं। इसको कहा जाता है ना– सूर्यवंशी दैवी झाड़। तुम अभी देखते हो कि दो भुजाएँ तुमको भी हैं और दो भुजाएँ जब हम सो लक्ष्मी वा सो नारायण बनेंगे तो दो–2 भुजाएँ बनेंगी। अभी इनके जो चित्र दिखलाए हुए हैं, तो कोई में श्री लक्ष्मी को भी चार भुजाएँ हैं तो नारायण को भी चार भुजाएँ हैं। कोई चार भुजाएँ नारायण को देते हैं तो लक्ष्मी को दो भुजाएँ दे देते हैं। अब इन बिचारों को कोई चित्र बनाने का वो ज्ञान तो है नहीं कि ये कौन हैं। सूर्यवंशी की दो भुजाएँ ये लक्ष्मी–नारायण हैं, ये भी उनको तो कोई पता ही नहीं है; क्योंकि वो तो पूजा करते रहते हैं ना, उनको ज्ञान तो है नहीं और तुम सब बच्चों को तो बहुत अच्छी तरह से ज्ञान दिया जा रहा है। समझ रहे हो, दिन–प्रतिदिन समझते जाते हो। पलटने के लिए तो समझाया जाता है कि बाप को याद करते रहो तो तुमको ये वर्सा मिलेगा। ये है ना, मन्मनाभव का अर्थ भी तो बाप फिर भी समझाते रहते हैं ना। यहाँ तो पढ़ाते रहते हैं ना। वो तो पढ़ाया था। उनका ये किताब बना हुआ है। अभी तुमको प्रैक्टिकल में फिर पढ़ाय रहे हैं, जो तुम अपना राजभाग अथवा वर्सा कहो, ले करके फिर अपना 84 जन्म भोगेंगे। तो देखो, इस समय में ड्रामा पास्ट हो जाता है ना। जैसे कोई नया आदमी जा करके ड्रामा देखेगा तो शुरू से ले करके पिछाड़ी तक देखेंगे तो उनको सारा ऊपर से ले करके पिछाड़ी तक...। जिन्होंने ड्रामा न देखा होगा उनको तो कुछ पता ही नहीं है। तो देखो, तुमको अब ये ज्ञान हुआ कि मूलवतन–सूक्ष्मवतन...। अभी मूलवतन–सूक्ष्मवतन भी कोई मनुष्य को मालूम नहीं है कि मूलवतन किसको कहा जाता है। भला आत्माएँ कैसे वहाँ निवास करती हैं ? यानी अहम् आत्माएं, अपनी आत्मा का ठिकाना तो मालूम होना चाहिए ना। इस शरीर का ठिकाना तो मालूम पड़ता है कि भई, ये बाबा ने हमारा शरीर रचा है। कैसे रचा है वो जानते हैं। अभी परमपिता परमात्मा, जिसको क्रियेटर कहा जाता है, दुनिया को तो मालूम नहीं है कि वो क्रियेटर कैसे है, ये मनुष्य सृष्टि पहले–2 कैसे रचते हैं। कोई को भी मालूम तो नहीं है ना। तुम बच्चों को अभी सारा ज्ञान मालूम पड़ा कि बाप कैसे आ करके ब्रह्मा द्वारा ये स्थापना करते हैं। तो देखो, ये जो भी तुम्हारी ब्राह्मण की संस्था है, वो तुम कहते तो हो ना– भई, हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं। अच्छा, दुनिया को तो कुछ मालूम नहीं पड़ता है ना– ये प्रजापिता ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। तो फिर प्रजापत्नी कहाँ है ? देखो, ये बहुत गुप्त बात हुई ना। तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि पत्नी कोई सरस्वती या कोई...। वो सभी तो बेटी है ना। प्रजापिता तो है। कहते भी हैं..... त्वमेव माताश्च

पिता। अभी कहा किसको जाए ? पहले पुकारते तो वो हैं– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। अच्छा, अभी प्रजापिता तो साकार में हुआ, तो माता भी साकार में होनी चाहिए। अभी साकार में मात–पिता उनको तो कह नहीं सकते हैं ना। वो तो पिता है ही है, वो माता तो है ही नहीं; क्योंकि हम जब कहते हैं कि सभी ब्रदर्स हैं तो...सभी आत्माएँ हो, पिता तो उनका एक है। यहाँ तो कोई माता का क्वेश्चन नहीं उठता है। अभी माता फिर किसको कहा जाता है, ये भी तो बहुत गुप्त है ना कि भई .. इन द्वारा ; तो फिर क्या कहें? तब इनको ही कहें– तुम मात–पिता हम बालक तेरे। तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। अभी इन मात–पिता द्वारा, जिसे एडॉप्ट करते हैं, इन द्वारा तो सुख नहीं मिलता है ना। फिर भी सुख तो उन द्वारा मिलता है। देखो, ये कितनी समझ की बात है और मुँझारे की बात है कि कहते हैं तुम मात–पिता। ये गाते भी हैं उनको। कभी आएंगे, इसको आ करके गाएँगे मात–पिता? क्योंकि ये लक्ष्मी–नारायण भी तो युगल है। अच्छा, ब्रह्मा का तो कोई युगल दिखलाया नहीं है। कोई है ? कुछ भी नहीं है। वो तो अकेला ही दिखलाया है। फिर ब्रह्मा प्रजापिता, पीछे उनके सभी बच्चे दिखलाए हैं। देखो, तुम बाबा–2 कहते हो। भई, प्रजापिता ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। अभी सबका प्रश्न तो उठेगा ना कि माता कहाँ ? अभी माता का क्वेश्चन तो इसमें बड़ा गुप्त आता है; क्योंकि माता जो एडॉप्ट की जाती है, हो तो तुम भी एडॉप्शन ना। उनको समझाया जाता है– यह सरस्वती है। मुख्य यह है। कलश पहले–2 इनको दिया; पर दिया तो बच्ची के हाथ में ना। ऐसे कहेंगे ना। सरस्वती के (लिए) तो गाया ही जाता है– ब्रह्मा की बेटी। अभी मात–पिता का सवाल कहाँ तक हल करें? क्या करें ? ये उनको भी तो नहीं कह सकते हैं कि मात–पिता हैं। जो हम कहते हैं, अगर उनके बच्चे हैं तो हम ब्रदर्स हैं। अच्छा, प्रजापिता ब्रह्मा, तो फिर क्या उन एक को ही कहें– तुम मात–पिता ? तुम मात–पिता अगर इनको कहें तो भी बाप (ने) बोला है कि इन द्वारा तो तुमको अब वर्सा मिलता ही नहीं है। वर्सा तो उन बाप द्वारा मिलता है। अभी कह नहीं सकते हैं कि मात–पिता से वर्सा मिलता है। वर्सा तो फिर भी बाप से मिलता है ना। वहाँ माँ तो है नहीं वास्तव में। तो बहुत बच्चों से इस बात में ये सवाल बहुत करते होंगे कि तुम मात–पिता जो हम कहते हैं और कहते हैं कि बरोबर हम उस परमपिता परमात्मा को कहते हैं– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे। अभी क्रियेटर भी है ज़रूर। देखो, ये बहुत समझ की बात है और इनमें बहुत कुछ मूँझते भी होंगे। मूँझ पड़ेंगे, समझाय नहीं सकेंगे, जो कच्चे होंगे। जिनको सिर्फ यही समझाया जाता है कि बाप को याद करो और वर्से को याद करो, वो तो सिर्फ बाप को याद करते हैं और अपने वर्से को याद करते हैं; क्योंकि ये वर्सा तो है ही श्री लक्ष्मी–नारायण को। बरोबर फिर भी जोड़ा है ना। इनको वर्सा तो बाप से मिला है, और तो कोई से...। अभी वो मात–पिता कैसे हुए ? ये अभी तलक भी तुम(को) समझाने में बड़ी मुश्किलात होती होगी, अंदर में मूँझते होंगे। इतना कुछ पूछते हैं ना कि कोई–2 को शायद लज्जा आती होगी; परन्तु ये बहुत विचार–सागर–मंथन करने से, ये जो समझाने वाले हैं वो खुद मूँझते होंगे।...बाप कहते हैं कि भई, तुम हमारे बच्चे हो, सभी आत्माएँ हो। हम तुम्हारे बाप हैं। अच्छा, हमको रचता कहते हैं। मैंने अभी आ करके इसमें प्रवेश किया है। देखो, सन्मुख बैठकर समझाते हैं ना। अभी इन द्वारा मैं तुमको कहता हूँ तुम हमारे हो। तो गोया ये दोनों ही हो जाते हैं ना। ये माता भी हो जाते हैं तो पिता भी हो जाते हैं; परन्तु मात–पिता तो ठीक है– तुम मात–पिता हम बालक तेरे। तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। कृपा किसकी है ? कृपा तो फिर भी शिवबाबा की कहेंगे, जो इन मात–पिता द्वारा तुमको बैठ करके वर्सा देते हैं; क्योंकि ये समझने की है ना। ये है विचार। जैसे कहा जाता है ना– ठण्डी में विचार करना है कि हम मात–पिता आखिर में किसको कहें ? उनको कहते हैं तो बहुत समझाना चाहिए– वो तो एक ही है। सब आत्मा ही हैं। फिर देखो, बाबा अभी इन द्वारा कह रहे हैं मैं तुझे एडॉप्ट करता हूँ। तो ये माता–पिता हो जाते हैं ना;

क्योंकि इन द्वारा तुमको एडॉप्ट करता हूँ, तो तुम हो गए पौत्रे और पौत्री। बाकी मात–पिता इन एक को कहें या शिवबाबा को कहें ? किसको कहें ? बाप समझाते रहते हैं कि उनकी महिमा है– तुम मात–पिता; क्योंकि क्रियेटर है तो ज़रूर माता होगी। माता तो देखने में ही नहीं आती है। यह तो पिता है। तो फिर इनको ही कहा जाए– तुम मात–पिता हम बालक तेरे, बालक और बालकियाँ। देखो, कहते भी हो ना– ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। अभी माता कहाँ ? किसको माता समझें ? क्या इनको समझें या शिव को ? शिव को माता कहेंगे, वो बोलते हैं– नहीं, हम पिता हैं। एक आखानी है ना। ऊँटपक्षी के मुआफिक कहते हैं– भई, यह ऊँटपक्षी है। उसको कहो कि उड़ो। जी, मैं ऊँट हूँ। अच्छा, बोझा उठाओ। जी, मैं पक्षी हूँ। तुम(ने) म्यूज़ियम में ऊँटपक्षी देखा है ना। तुम(ने) कहाँ देखा होगा, शायद कलकत्ते में ही तो है। या और कोई जगह है ? जू में कलकत्ते में है। मैं नहीं समझता हूँ बॉम्बे में है। देखो, ये बड़ी समझ की बात है कि किसको कहें– तुम मात–पिता। तो फिर समझाया जाता है कि वो बाबा आ करके अच्छी तरह से समझाते हैं– मैं सब आत्माओं का तो पिता हूँ। अभी मुझे रचना रचनी है सो तो मुझे ज़रूर साकार में आना पड़े। अच्छा, देखो साकार में आ गया, इसमें प्रवेश किया, तो ये प्रजापिता ब्रह्मा। फिर बोलते हैं मैं इन द्वारा तुमको एडॉप्ट करता हूँ। तो ये तुम्हारी माँ भी हो गई। जो बच्चियाँ हैं वो तो कहेंगी कि ये हमारी मम्मा है; क्योंकि उनको भी मम्मा चाहिए, तुमको भी मम्मा चाहिए ज़रूर। तो देखो, इसको ही कोई कह सकेंगे, समझ सकेंगे कि इसको माता भी कहा जाए, पिता भी कहा जाए ? तो इनको ही मात–पिता कहें। उनको सिर्फ बाप कहें। तुम मात–पिता के शरीर में आ करके हमको एडॉप्ट करते हो, फिर ऐसा हो जाता है। मात–पिता दोनों ही लकब जैसे कि इनको आ जाता है; क्योंकि वो जगदम्बा गाई जाती है ज़रूर। उसको जगदम्बा का टाइटिल मिलता है; परन्तु जगदम्बा का टाइटिल कायदेमुजीब तो नहीं है ना; क्योंकि ये तो हम चलते हैं, ये जो शास्त्रों में लिखा है वो बैठ करके रिपीट करके उनके ऊपर में समझानी देते हैं कि शास्त्र तो कहते हैं– जगदम्बा, भई सरस्वती। जगदम्बा सरस्वती यह तो हुई ब्रह्मा की बेटी। ठीक हुआ ना। तो ब्रह्मा ने बेटी कैसे बनाई ? एडॉप्ट किया। शिवबाबा द्वारा एडॉप्ट किया। अगर सिर्फ कहें कि शिवबाबा पिता हुआ, ब्रह्मा द्वारा बच्चे लिए, तो ब्रह्मा तो है ही मेल, फिर इनको माता कैसे कह सकेंगे ? तो जैसे कि ये लगता नहीं है। ये भी पिता है। तो पिता द्वारा बाप ने आ करके एडॉप्ट किया। तुम ''बाबा'' कहते भी इसको ही हो। अभी मम्मा किसको कहेंगी ? ब्रह्मा की बेटी सर(स्वती) तुम्हारी बहन है ना। तो बड़ी बहन को बाप के डायरेक्शन अनुसार कहेंगे कि इनको ही बड़ा टाइटिल दो... परन्तु माँ तो नहीं कहा जाए ना। अगर इसमें जगदम्बा भी लिखा हुआ है, चित्र भी निकलते हैं, तो उनको क्या कहें ? क्योंकि इनकी भी माँ तो ठहरी ना। इनका बाप तो है ना। ऐसे तो कहेंगे ना जैसे तुम कहती हो बाबा है। फिर मम्मा किसको कहें? ये देखो, बहुत मूँझ होती है ना। फिर इनके ऊपर आपस में ख्याल करो कि कैसे किसको हम समझावें? हम 'तुम मात–पिता' किसके नाम पर याद करें? वो तो ठीक है, पिता है। ये सभी ब्रदर्स हैं। ये भाई–बहन बनते हैं तब जबकि बाप ब्रह्मा द्वारा रचता है। तो ऐसे कहें भला– वो बाप, ये माँ हो गई। इनको माँ भी तो नहीं कहते हैं, इनको भी प्रजापिता कह देते हैं। मेल है। तो बाप प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट करते हैं तो गोया जैसे कि एडाप्ट करते हैं। इसको ही माता ही कहें, पिता ही कहें। उनको तो कह नहीं सकते हैं। जैसे पहले समझाया जाता है कि वो मात–पिता है, हम उनके बालक हैं; परन्तु माता कहाँ ? माता का भी तो सभी पूछेंगे ना। तो फिर इनको आ करके पकड़ना पड़ेगा और तो बीच में कोई चीज़ है नहीं जिसको पकड़ें! है कोई दूसरी चीज़ ? ये अभी तुमको मिला है। तुम्हारी बुद्धि में जैसे कि वैसे। कैसे मिलता है सो तुम जानते हो। दुनिया तो सिर्फ कहने मात्र है कि बरोबर परमपिता परमात्मा द्वारा, बेहद के बाप द्वारा, बेहद 21 पीढ़ी

का वर्सा मिलता है। बस, सिर्फ यहाँ तक गाया हुआ है। कैसे मिलता है, कब मिलता है, ये तो कोई भी नहीं जानते हैं। अभी तुम जान गई हो कि बरोबर हमको बाबा द्वारा फिर से 21 जन्म का वर्सा मिल रहा है। तुम 'फिर से' अक्षर डालोगी तो भी कुछ मदद आती है; क्योंकि 84 का चक्कर पूरा हुआ, अभी ये विनाश सामने खड़ा है। इससे जास्ती जन्म तो लेने का ही नहीं है। यह गाया भी हुआ है बरोबर 21 पीढ़ी सो तो वहाँ ही पूरे हो गए। 21 पीढ़ी, 21 जन्म; क्योंकि पवित्र रहते हैं। अच्छा, बाकी जास्ती जन्म कैसे होंगे ? पवित्रता के 21, तो देखो उनका वन थर्ड.....। वो 21 तो वो 84। कितना भाग होता है? वहाँ वन फोर्थ होता है, बाकी थ्री फोर्थ ..चक्कर लगाते रहते हैं यानी आधा सुख तो मिल जाता है ना। आधाकल्प सुख मिलता है; क्योंकि सूर्यवंशी और चंद्रवंशी घराने को मनुष्य जानते तो हैं बरोबर कि इसको स्वर्ग कहा जाएगा, इसको नर्क कहा जाएगा। ऐसे नहीं है कि नहीं जानते हैं। स्वर्ग है ही बस दो पीढ़ी– सूर्यवंशी और चंद्रवंशी। तो ये सभी बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं। किसको समझाने के लायक बने हो कि हम मनुष्य को समझा सकते हैं– भारत में 21 जन्म ये सूर्यवंशी–चंद्रवंशी राज्य था। बस, उसकी ही महिमा। उनको ही स्वर्ग कहा जाता है, उनको हैविन कहा जाता है...। फिर आधाकल्प तो ज़रूर पुरानी ही दुनिया कहेंगे; क्योंकि रजो–तमोगुणी हो जाती है। रजोगुणी–तमोगुणी हो गई, तमोगुणी से फिर हमको सतोप्रधान बनना ही है। .. तुम बच्चों की बुद्धि में कितना–2 नॉलेज है। तुम्हारी आँख ही खुल गई, जिसको कहा जाता है ज्ञान का तीसरा नेत्र। आत्मा का ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल गया। सारे सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का तुमको अच्छी तरह से मालूम हो गया। सारा दिन बुद्धि में ये चलता रहता है। जो ज्ञान होता है सो चलता रहता है ना, जब तलक हैं; क्योंकि तुम बदली हो जाते हो ना ; इसलिए ये ज्ञान गुम हो जाता है। बाकी मनुष्य जो पढ़ते हैं वो संस्कार तो दूसरे जन्म के लिए भी ले जाते हैं ना; क्योंकि आते ही हैं मृत्युलोक के मृत्युलोक में, तो संस्कार आ सकते हैं। ऐसे तो नहीं है कि कोई मृत्युलोक के ये छी–2 संस्कार चलेंगे। ...फिर जो तुमने ज्ञान लिया, उनसे तुम(ने) प्रालब्ध ली। जैसे कि तुमने ये ज्ञान लिया, बस वहाँ जाएँगी, तुम्हारी प्रालब्ध शुरू हो जाएगी; क्योंकि वहाँ तुम्हारे में ज्ञान होगा ही नहीं। वहाँ तुम्हारे पास ज्ञान क्यों होगा? किसको आकर देंगे या वहाँ देंगे? ...ये बाबा के पास ज्ञान है सो आ करके देते हैं, बाकी तुम जब वहाँ जाएँगे तो बस वहाँ तो फिर तुम्हारा...आएगा कि हम जाकर प्रालब्ध भोंगे। फिर तो तुम आएँगे अनायास ही। बड़े घर में आएँगे और बैठ करके अपने महल वगैरह बनाएँगे। तो देखो, तुम्हारी बुद्धि में कितना ज्ञान है अच्छी तरह से, जिन–2 में नंबरवार है और इस ज्ञान को सिमरन करके कितनी खुशी होगी। जिनको नॉलेज बड़ी होती है वो तो खुश होते हैं ना। दूसरे मनुष्य भी जानते हैं कि ये बहुत बड़ा पढ़ा हुआ है। देखो, कितना बड़ा–2 इम्तहान जाकर पास किया है ! तुमको भी तो ऐसे ही समझेंगे ना, जो फिर समझ करके देखो तुम्हारे से ज्ञान लेते हैं। जब तुम उनको बैठ करके समझाती हो, वो खुश होते हैं। तो ऐसे ही समझते–2 नंबरवार बहुत समझ जाएँगे। जो फिर यहाँ ही स्थापना होगी और वहाँ आ करके प्रालब्ध भोगेंगे। ये तो तुम बच्चों को मालूम है कि हम जो यहाँ पढ़ते हैं वो भविष्य में प्रालब्ध लेंगे। अभी ऐसे तो दूसरे कोई की बुद्धि में नहीं है। अभी तुम्हारी बुद्धि में है, अभी जो बाबा हमको पढ़ाते हैं, सो पढ़ाते हैं नई दुनिया के लिए और नई दुनिया में हम 21 जन्म की प्रालब्ध ले रहे हैं, जिसके लिए हम आधाकल्प तड़पे हैं। ये तड़पना भी तो ड्रामा में नूँध है। अच्छा बच्ची, ले आओ।... आते रहते हैं। .....लक्ष्मी–नारायण के मंदिर में बैठने से कुछ भी नहीं, यहाँ इसके सामने आकर बैठने से तुमको एकदम सारे चक्कर का ज्ञान आ जाता है। देखो, कितना फर्क है ! अभी यहाँ कोई लक्ष्मी–नारायण तो नहीं रखा है। कुछ ऐसे सजाया हुआ तो नहीं है। कुछ भी नहीं है। ये नॉलेज के लिए जैसे स्कूल में, कॉलेज में चित्र रखे जाते हैं। इनसे देखो तुमको कितनी नॉलेज मिलती है ! देखो,

बहुत ही बच्चियाँ ऐसे बैठ करके बहुतों को नॉलेज देती हैं ना। नॉलेज भी देनी चाहिए, योग में भी बैठाना चाहिए; परन्तु सिर्फ योग क्यों? नॉलेज क्यों नहीं ? ये बैठना तो सबका है ना। देखो, नम्बरवार सब बैठती हैं। पुरुष भी बैठते ही हैं; परन्तु नहीं, इनको नॉलेज भी तो देनी है ना। सिर्फ योग थोड़े ही सीखे हैं, नॉलेज भी तो सीखे हैं ना। ये तो ठीक है, याद से हम एवर हेल्दी बनेंगे, उसके लिए ये भी बैठते हैं, तुमको भी बैठाते हैं; पर हम एवर हेल्दी बनेंगे, वाणी की भी ज़रूरत नहीं है। वाणी चलना तो और ही सहज है। उसमें कोई डिफीकल्टी तो है नहीं। जैसे बाबा बैठ करके समझाते हैं। उनकी हेर पड़ जाएगी तो कोई सेन्टर में जा करके सर्विस भी कर सकेंगे। अभी यहाँ भी सर्विस कर सकते हैं अगर ज्ञान हो। देखो, हमारी भण्डारी है। अगर थोड़ा ज्ञान भी बुद्धि में हो या जो–2 कोई भण्डारी में काम करते हैं और यहाँ भी आ करके थोड़ी समझानी दे देवे कि हमको बाबा से 21 जन्म का वर्सा मिलता है। अज्ञान काल में तो एक–एक जन्म का मिलता है। तो बाबा को क्यों नहीं याद करेंगे ! क्यों नहीं इस चक्कर को याद करेंगे ! कोई तकलीफ थोड़े ही है। अरे, इतना आ करके थोड़ा बैठ करके समझावे तो भी कोई भी जो नए आते हैं ना, समझें भई यहाँ इनके पास ज्ञान में सब हैं जो पकाते हैं। ऐसे नहीं है कि पकाते हैं....में ज्ञान नहीं है। स्कूल है तो ऐसे थोड़े ही है कि सिर्फ पकाने के लिए है। नहीं, स्कूल में पढ़ने लिए भी है; परन्तु जास्ती शौक नहीं है। सम्भाल करने वाले भी मिल सकते हैं, बाबा प्रबंध कर सकते हैं। शौक हो आ करके समझने की तो बहुत सहज, मोस्ट ईज़ी बातें हैं समझने की। किसको खुशी का पारा चढ़ जावे ये बातें सुने तो। तो है ना खुशी का पारा। अति–इन्द्रिय सुख माना क्या ? खुशी का पारा। तो खुशी तो सबको देनी चाहिए ना। सो भी ज्ञान है, दिया जाता है। कोई किसको रकम उठाकर थोड़े ही दी जाती है। नहीं, ज्ञान दिया जाता है। सो तो सबको शौक चाहिए। कहाँ भी जाएँ, किनसे भी रस्ता है, तो एक न दो, दो न चार, चार न पाँच, ऐसे कुछ न कुछ मिलता रहता है। अभी तो बहुत ये छपाई हो रही है। छपाई के ऊपर भी समझाकर समझाय सकते हैं। चित्र के ऊपर भी समझाय सकते हैं। अरे, ये मैडल है, उनके ऊपर भी समझाया जा सकता है कि देखो, हम अभी मम्मा–बाबा से वर्सा ले रहे हैं और दुनिया विनाश होती है शंकर द्वारा। एक लॉकेट, ये पर्सीज़ वगैरह क्यों बनाते हैं इनसे ? कि सबको ईज़ी होवे समझाने के लिए। मोस्ट ईज़ी है समझाना। वो विषय सागर, ये ज्ञान सागर। ये तो बिल्कुल मशहूर है कि विषय सागर से हम ऐसे पतित–तमोप्रधान बन गए। अभी ज्ञान–सागर को याद करने से हम सतोप्रधान बनते हैं। उसका ये अर्थ है– मन्मना भव, मद्याजी भव। अच्छा ! मीठे–2 बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का याद–प्यार और गुडमॉर्निंग।

बाबा भी कहे– बच्चे, कुछ न कुछ, कुछ न कुछ समझें। मैं प्रबंध...। वहाँ की तो कोई बात ही नहीं है। शौक अपना चाहिए समझने का और समझाने का। रहमदिल ज़रूर बनना चाहिए, नहीं तो बाप समझते हैं कि ये रहमदिल बच्चे नहीं बने हैं, कुछ इनमें खेद–खराबी है ज़रूर, जो धारणा नहीं होती है। तो कोशिश करेंगे ना कि रहमदिल बनें, किसको जा करके कुछ न कुछ दिखलावें। इसलिए ये चित्र वगैरह सब हैं। अभी ये जो छपाई आएगी ना, उनमें भी बहुत कुछ है। ये जो बाबा कैलेण्डर के लिए पूछते हैं ना। अच्छे करके बनाओ। यही फिर 25 हज़ार जो लिखते हैं, उनमें लिखा होगा। 25 क्या, 50 हज़ार भी लिखते होंगे। ...हम बोलते हैं लॉकेट बनाओ। उनको दो रोज़ का कमरा दे दो। नहीं बाबा, क्या करेंगे?....अरे नहीं, चार रोज़ का आर्डर दो। हम बोलते हैं दो, तुम बोलते हो एक। हम बोलते हैं चार रोज़ का आर्डर दो; क्योंकि बेहद का बाप है ना। देखो, वो हद में लटकते हैं, ये झट बेहद में चले जाते हैं। नशा रखता है ना; क्योंकि सर्विस...। अच्छा ! बच्चों को गुडमॉर्निंग।